"भारत की बेटियों की शिक्षा: सामाजिक परिवर्तन की एक यात्रा"

यूपीएससी के लिए प्रासंगिकता

- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र 1 (समाज):** महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, बदलते सामाजिक दृष्टिकोण।
- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र 2 (शासन एवं सामाजिक न्याय):** शिक्षा नीतियाँ, सरकारी योजनाएँ, अंतर-मंत्रालयी समन्वय।
- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र 3 (अर्थव्यवस्था एवं विकास):** कार्यबल भागीदारी पर प्रभाव, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, मानव पूँजी निर्माण।
- **सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र 4 (नैतिकता एवं सत्यनिष्ठा):** सामाजिक परिवर्तन में जवाबदेही, नेतृत्व और नैतिक उत्तरदायित्व।

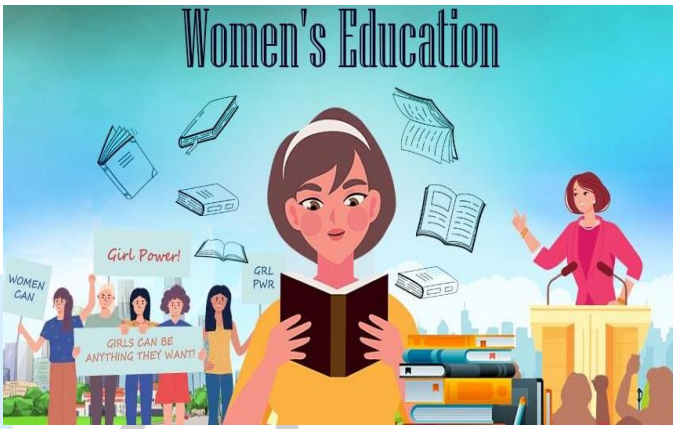

संदर्भ

दशकों से, **"बेटी पढ़ेगी तो क्या करेगी?"** यह प्रश्न भारत में लड़कियों की शिक्षा के प्रति गहरे सामाजिक पूर्वाग्रह को दर्शाता रहा है। हालाँकि, पिछले दो दशकों में एक आदर्श परिवर्तन देखा गया है। **गुजरात के कन्या केलवणी अभियान** से लेकर राष्ट्रव्यापी बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ **(बीबीबीपी)** योजना तक, नीतिगत सुधारों, नेतृत्वकारी पहलों और सामुदायिक भागीदारी ने बालिका शिक्षा को परिवर्तनकारी सामाजिक-आर्थिक प्रभावों वाले एक आंदोलन में बदल दिया है।

परिवर्तन के आयाम

ऐतिहासिक और सामाजिक जड़ें

- गुजरात में गायकवाड़ राजवंश (1721-1947) के शासन में, बेटियों को शिक्षित न करने पर पिताओं को दंडित किया जाता था।
- फिर भी, स्वतंत्रता के बाद के भारत में, पितृसत्तात्मक मानसिकता, बुनियादी ढाँचे की कमी और कम उम्र में विवाह की प्रथाओं के कारण बालिका शिक्षा पिछड़ गई।

गुजरात परिवर्तन मॉडल

- **कन्या केलवणी अभियान (2003):** जागरूकता अभियान, बेहतर स्कूली बुनियादी ढाँचे और लड़कियों के लिए अलग शौचालयों के प्रावधान ने लक्षित जिलों में स्कूल छोड़ने की दर में 90% की कमी की।
- **जनभागीदारी:** प्रधानमंत्री मोदी ने व्यक्तिगत रूप से बालिका शिक्षा के लिए Rs.19 करोड़ मूल्य के उपहारों की नीलामी की और Rs. 21 लाख का योगदान दिया, जिससे नीति एक सामाजिक आंदोलन में बदल गई।
- **परिणाम:** गुजरात में महिला साक्षरता दर बढ़कर 70% हो गई (राष्ट्रीय औसत 64% से अधिक)।

राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत प्रयास

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (2015): लिंग-संवेदनशील 100 जिलों को लक्षित किया गया, बाद में इसे देशव्यापी रूप **से विस्तारित किया गया।**

उपलब्धियाँ:

- जन्म के समय लिंगानुपात 919 (2015-16) से बढ़कर 929 (2019-21) हो गया।
- 30 में से 20 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों का प्रदर्शन राष्ट्रीय औसत से बेहतर रहा।

अंतर-मंत्रालयी समन्वय: महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य और मानव संसाधन विकास मंत्रालयों ने कन्या भ्रूण हत्या को रोकने और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम किया।

IAS-PCS Institute

सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय प्रभाव

- **स्वास्थ्य परिणाम:** लड़कियों की शिशु मृत्यु दर 49 (2014) से घटकर 33 (2020) हो गई। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाएं संस्थागत प्रसव और प्रसवपूर्व देखभाल को प्राथमिकता देती हैं।
- **जनसांख्यिकीय लाभांश:** भारत की कुल प्रजनन दर घटकर 2.0 रह गई, जो प्रतिस्थापन स्तर से थोड़ा नीचे है, जिसका महिलाओं की उच्च शिक्षा से गहरा संबंध है।
- **कार्यबल भागीदारी:** स्वास्थ्य सेवा, STEM, शिक्षा, उद्यमिता और सशस्त्र बलों में महिलाओं की प्रवेश दर में वृद्धि। उदाहरण के लिए, "नवीनतम PLFS (2021-22) के अनुसार, कामकाजी आयु वर्ग की महिलाओं (15+) में महिला श्रम बल भागीदारी 2017-18 के 23.3% से बढ़कर 32.8% हो गई, जो 9.5 प्रतिशत अंकों की वृद्धि दर्शाती है।"

शिक्षित महिलाओं का गुणात्मक प्रभाव

1. बच्चों की शिक्षा में वृद्धि: शिक्षित महिलाएं अपने बच्चों की स्कूली शिक्षा में निवेश करने की अधिक संभावना रखती हैं, जिससे नामांकन और सीखने के परिणामों में सुधार होता है।

- **उदाहरण के लिए:** NFHS-5 (2021-22) की रिपोर्ट है कि माध्यमिक शिक्षा प्राप्त माताओं के बच्चों के प्राथमिक शिक्षा पूरी करने की संभावना 1.5 गुना अधिक होती है।
- **केस स्टडी:** मध्य प्रदेश में, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) के अंतर्गत किए गए सर्वेक्षणों से पता चला है कि शिक्षित माताओं के बच्चों की स्कूल उपस्थिति में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

2. बेहतर स्वास्थ्य और पोषण संबंधी प्रथाएँ: शिक्षित माताएँ बेहतर मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सुनिश्चित करते हुए, स्वास्थ्यवर्धक प्रथाओं को अपनाती हैं।

- **उदाहरण के लिए:** माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएँ संस्थागत प्रसव सेवाओं का उपयोग करने और अपने बच्चों का पूर्ण टीकाकरण सुनिश्चित करने की अधिक संभावना रखती हैं।
- **केस स्टडी:** लगभग सार्वभौमिक महिला साक्षरता वाला केरल, भारत में सबसे कम शिशु मृत्यु दर वाले राज्यों में से एक है, जहाँ प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर शिशु मृत्यु दर 12 है।

3. विलंबित विवाह और कम प्रजनन दर: शिक्षा विवाह की आयु में देरी करती है और परिवार के आकार को कम करती है, जिससे बेहतर जनसांख्यिकीय और सामाजिक परिणाम प्राप्त होते हैं।

- **उदाहरण के लिए:** राजस्थान में, माध्यमिक शिक्षा प्राप्त महिलाएँ स्कूली शिक्षा प्राप्त महिलाओं की तुलना में औसतन 3-4 साल बाद विवाह करती हैं।
- **केस स्टडी:** एनएफएचएस-4 (2015-16) दर्शाता है कि 12 वर्ष से अधिक की स्कूली शिक्षा प्राप्त महिलाओं की कुल प्रजनन दर (टीएफआर) 1.7 है, जबकि अशिक्षित महिलाओं की कुल प्रजनन दर 3.1 है।

4. आर्थिक सशक्तिकरण और सामुदायिक नेतृत्व: शिक्षित महिलाएँ आय सृजन, उद्यमिता और सामुदायिक निर्णय लेने में भाग लेती हैं, जिससे व्यापक सामाजिक और आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं।

- **उदाहरण के लिए:** स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की शिक्षित महिलाएँ सूक्ष्म वित्त परियोजनाओं और छोटे व्यवसायों में बेहतर परिणाम प्राप्त करती हैं।
- **केस स्टडी:** गुजरात में, कन्या केलवणी जैसी पहलों ने साक्षर महिलाओं को छोटे व्यवसाय चलाने, घरेलू आय बढ़ाने और अन्य परिवारों को लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करने में सक्षम बनाया।

आगे की राह

1. सरकारी योजनाओं को सुदृढ़ बनाना:

- लिंग-संवेदनशील बुनियादी ढाँचे के साथ समग्र शिक्षा अभियान का विस्तार।
- लड़कियों की उच्च शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) का प्रभावी कार्यान्वयन।
- सुकन्या समृद्धि योजना को निरंतर शिक्षा के लिए प्रोत्साहन से जोड़ा जाएगा।

2. कार्यबल भागीदारी में अंतराल को पाटना:

- उभरते क्षेत्रों में महिलाओं के लिए कौशल भारत मिशन के तहत कौशल विकास पहल।
- महिलाओं को नौकरियों में बनाए रखने के लिए कार्यस्थल सुरक्षा, मातृत्व सहायता और समान वेतन सुनिश्चित करना।

www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

3. सामाजिक बाधाओं से निपटना:

- कम उम्र में विवाह के खिलाफ सामुदायिक जागरूकता अभियान।
- ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में स्थानीय महिला रोल मॉडल को बढ़ावा देना।

4. प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना:

- डिजिटल इंडिया के तहत लड़कियों के लिए डिजिटल साक्षरता का विस्तार।
- ग्रामीण क्षेत्रों में कम लागत वाले उपकरण और इंटरनेट की सुविधा प्रदान करना।

निष्कर्ष

भारत में लड़कियों की शिक्षा में बदलाव एक शैक्षिक सुधार से कहीं अधिक है - यह एक सामाजिक क्रांति है। शिक्षित लड़कियां सशक्त महिलाएं, स्वस्थ माताएं और अर्थव्यवस्था में सक्रिय योगदानकर्ता बनती हैं। निरंतर नीतिगत समर्थन, सामाजिक भागीदारी और जड़ जमाए हुए पितृसत्तात्मक अवरोधों को तोड़ने पर ध्यान केंद्रित करके, भारत सशक्तिकरण और विकास का एक अच्छा चक्र बना सकता है। वास्तव में, जब आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं, तो आप एक पूरे समाज को शिक्षित करते हैं।

प्रारंभिक परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत में लड़कियों की शिक्षा और उसके प्रभावों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. गुजरात में कन्या केलवणी अभियान ने स्कूल छोड़ने वाली लड़कियों की संख्या में 90% की कमी की और महिला साक्षरता दर को 70% तक बढ़ाया।
2. NFHS-4 (2015-16) दर्शाता है कि 12+ वर्ष की शिक्षा प्राप्त महिलाओं की कुल प्रजनन दर (TFR) 1.7 है, जबकि बिना स्कूली शिक्षा प्राप्त महिलाओं की कुल प्रजनन दर 3.1 है।
3. महिला श्रम बल भागीदारी 2021-22 में 32.8% से घटकर 2017-18 में 23.3% हो गई।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) उपरोक्त सभी

उत्तर: a) केवल 1 और 2

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: "भारत में बालिका शिक्षा ने साक्षरता, सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय परिवर्तनों को किस प्रकार प्रेरित किया है, इसका परीक्षण कीजिए। कन्या केलावणी और बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी पहलों का उदाहरण दीजिए, इनके गुणक प्रभावों पर चर्चा कीजिए और आगे सुधार के उपाय सुझाइए।"

250 शब्द